RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 1 मार्च-अप्रैल 2023

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका–संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

डॉ. रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान ट्रष्ट चैन्नै

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by

Smt P V N B Srilakshmi

on behalf of

Bharatiya jyotisham

L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043

Editor - DR. ROHIT PACHORI*

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	भगवान् श्रीकृष्ण किसके वंशज : अभिव्यञ्जन एवं अवगुण्ठन की गूढ़ता	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	05
2.	शिक्षा व्यवस्था में समावेशन : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में	डॉ. रमेश कुमार अवस्थी	09
3.	सिद्धांतविहीन राजनीति : गांधी की दृष्टि में	डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय	14
4.	वेदों में पर्यावरण चिंतन	डॉ. निशीथ गौड़	18
5.	आयुर्वेद में श्वित्र की अवधारणा : एक समीक्षा	पूजा वर्मा, अभिनव, कामेश्वर नाथ सिंह, आरती कुमारी	21
6.	बाल शोषण एवं उसको रोकने में शिक्षा की भूमिका	डॉ. राजकुमारी गोला	24
7.	साङ्ख्य एवं अद्वैतवेदान्त दर्शन में सूक्ष्मशरीर का पर्यालोचन	डॉ. विकास सिंह	27
8.	माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा मॉडल के बदलते परिदृश्य में प्रधानाचार्य की भूमिका	डॉ. विनोद कुमार, सुमन पाल	32
9.	राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में उत्तराखण्ड की लोक-कलाओं का स्वरूप	डॉ. अनूप प्रसाद	38
10.	वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी का उदय और बाजार अर्थव्यवस्था में इसकी भूमिका	डॉ. योगेन्द्र बाबू, डॉ चन्द्र शेखर पाण्डेय	41
11.	श्रीमद्भगवद्गीता माहात्म्य	डॉ. गीता दूबे	46
12.	डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका	डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. प्रगति भटनागर	48
13.	केदारनाथ सिंह की कविताओं में सामाजिक सरोकार	राजेश कुमार	52
14.	उत्तर वैदिक कालीन राज्य, सामाजिक एवं शैक्षिक व्यवस्था	डॉ. रमण मिश्र	54
15.	पातंजल योग सूत्र में वर्णित अध्यात्म : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. अनुजा रावत	57
16.	मूलशंकर-नाट्यत्रयी में शासनपद्धति का धार्मिक प्रारुप	नन्दिनी	60
17.	राष्ट्रीय एकीकरण के विभिन्न आयाम : महात्मा गाँधी के दृष्टि से	डॉ. विकास कुमार	62
18.	हठयोग द्वारा समग्र स्वास्थ्य एक विवेचनात्मक अध्ययन	विनोद प्रसाद नौटियाल	66
19.	राजभाषा हिंदी से संबंधित संघ की राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन	डॉ. वीरेन्द्रसिंह राव	68
20.	पुराणों में योगवर्णित ईश्वर का स्वरूप	डॉ. अशोक कुमार मीना	71
21.	वृहद भारत में नया शिक्षा नीति (2020) को लागू करना एक चुनौती	डॉ. शशिकान्त यादव	78
22.	अभिज्ञानशाकुंतलम् : सामाजिक यथार्थ के आलोक में	डॉ. सोमनाथ दास	82
23.	भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सार्वजनिक-निजी साझेदारी की भूमिका	प्रिन्स कुमार	87
24.	कालिदास की रचना में संस्कृति एवं कला	डॉ. रघुनाथ प्रसाद	92
25.	ऊर्मिलीयमहकाव्य में गृहस्थजीवन की शिक्षा	चिरञ्जीत सरकार	94
26.	भारत में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध : एक नज़र	श्रीराधारंजन, डॉ. पल्लवीसिंह	97
27.	चण्डतान्डवम् : आधुनिक संस्कृत साहित्य में 'भाण'	डॉ. अर्णव पात्र	101
28.	सामाजिक सरसता रामायण के सन्दर्भ में	शुभम सिंह, डॉ. कनकलता	104

29. संस्कृत महाकाव्यों में आख्यान परम्परा	डॉ. संजीव कुमार	107
30. ग्रामीण विकास में सूचना और संचार का योगदान	डॉ. अजय कुमार सोनकर	109
31. गोंड पुरुषों के प्रजनन स्वास्थ्य स्थिति एवं सांस्कृतिक आयाम (महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के विशेष संदर्भ में)	नवलेश राम	111
32. भारतीय भाषा माध्यम से उच्च शिक्षा में सम्भावनायें, चुनौतियाँ एवं शिक्षकों की भूमिका: एक दृष्टि	प्रो. चंदना डे, डॉ. अंकिता सिंह	115
33. ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन में सामाजिक जनसंचार माध्यमों की भूमिका (गजरौला ब्लॉक के दो गॉवों के संदर्भ में)	पारूल, डॉ. सरिता	118
34. मुरादाबाद महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन	अजय गौतम, प्रो. (डॉ.) राजकुमारी सिंह	121
35. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अथर्ववेद की उपादेयता	डॉ. दीप्ति बाजपेयी, अनामिका	124
36. समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	पुलकित शर्मा, डॉ. राजेश कुमार शुक्ला	128
37. सम्भल जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की व्यक्तित्व समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन	अनामिका भारती, प्रो. मोहन लाल आर्य	131
38. माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि: एक अध्ययन	खेमेन्द्र कुमार शर्मा	134
39. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	प्रशान्त कुमार, डॉ. नीरा सिंह	138
40. विद्यार्थियों में मोबाइल फोन की तल या प्रयोग का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	145
41. मुरादाबाद जनपद में सिंचाई व्यवस्था एवं सिंचाई के साधनों का एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', राजेन्द्र सिंह	150
42. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	विनीत, डॉ. नीरा सिंह	155
43. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', कु. प्रियंका	158
44. बंगाली नाटककारों द्वारा रचित संस्कृत व्यंग्यनाटिका : धरित्रि-पति-निर्वाचनम्	मधुरिमा मुखर्जी	163
45. गोरखपुर जनपद में सिंचाई के साधन एवं सिंचित क्षेत्र का वर्तमान स्वरूप एक भौगोलिक विश्लेषण	डॉ. मोहन लाल 'आर्य', सविता सिंह	165
46. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्री विश्लेषण	डॉ. इन्दिरा श्रीवास्तव, नीतू शुक्ला	169
47. तनाव प्रबंधन में प्राणायाम (योगिक श्वसन) की भूमिका : एक व्यवस्थित समीक्षा	लक्ष्मीकांत नागर, डॉ. चिंताहरण बेताल	173
48. भारतीय यौगिक परिप्रेक्ष्य में मानसिक एकाग्रता	रश्मि तिवारी, प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह	180
49. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि का विश्लेषणात्मक अध्ययन	मौ. सालिम, महेन्द्र प्रसाद 'पाण्डेय'	184
50. गुरुभक्ति और भक्ति के साथ स्वप्नवासवदत्तम्	प्रवीर सरकार	189

ISSN 2278 - 0327

डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका

डॉ. मनीष भटनागर
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, लाडनूं

डॉ. प्रगति भटनागर
सहायक आचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
जैन विश्व भारती संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, लाडनूं

सार

शिक्षक की प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक युवाओं के जीवन को दिशा देते हैं एवं एक बेहतर समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। एक शिक्षक का कार्य केवल पढ़ने, पढ़ाने, समझाने और निर्देशन देने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि उसका प्रमुख कार्य विद्यार्थियों को प्रेरित करना, विद्यार्थियों के छुपे हुए गुणों को उजागर करना तथा एक अच्छे भविष्य निर्माण में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना होता है। आज के इस डिजिटल युग में शिक्षण व्यवस्था पूरी तरह बदल गई हैं। पहले विद्यार्थी के पास सूचना प्राप्त करने के साधन सीमित थे। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के लिए पूरी तरह शिक्षकों या पाठ्य पुस्तकों पर निर्भर था। किंतु आज के इस डिजिटल युग में विद्यार्थियों के पास सूचनाओं की बाढ़ सी आ गई है। आज के समय में उसके पास सूचना प्राप्त करने के लिए बहुत से ऑनलाइन संसाधन वीडियो, ऑडियो, टेक्स्ट एवं ट्यूटोरियल के रूप में उपलब्ध हैं। अब शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को समझाने और निर्देशित करने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसे एक समृद्ध और अद्वितीय सीखने का अनुभव प्रदान करना है। इस शोध पत्र में शिक्षक का विद्यार्थी जीवन में महत्व, परम्परागत शिक्षण में उसकी भूमिका, डिजिटल युग में शिक्षण में होने वाले परिवर्तनों, शिक्षक के सामने उससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियो तथा डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका पर चर्चा की गयी है।

मुख्य बिन्दु – डिजिटल युग, शिक्षक की भूमिका

शिक्षक की भूमिका शिक्षण में सदैव ही महत्वपूर्ण रही है तथा आगे आने वाले समय में भी उसकी अहम् भूमिका रहेगी । शिक्षा जगत में चाहे कितने ही परिवर्तन क्यों न आ जाये शिक्षक का स्थान कोई नहीं ले सकता। डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है जिससे शिक्षक की भूमिका में निश्चित रूप से बदलाव आया है। किन्तु इस युग में भी विद्यार्थी जीवन निर्माण में शिक्षक के योगदान को कम नहीं आंका जा सकता। डिजिटल युग में शिक्षा केवल कक्षा कक्ष तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका विस्तार घर, समुदाय तथा संपूर्ण विश्व में हो रहा है। आज जानकारी केवल किताबों में ही उपलब्ध नहीं है वरन इस युग में यह बिट्स और बाइट्स के रूप में हर जगह उपलब्ध है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आने के कारण शिक्षण प्रणाली में शिक्षक की भूमिका के पुनर्गठन की आवश्यकता है। आज स्कूलों से लेकर कॉलेज और हायर एजुकेशन सब में तकनीकी उपयोग के कारण शिक्षा में कई बदलाव आए हैं। आजकल शिक्षण में इंटरएक्टिव स्मार्ट बोर्ड्स, हाइब्रिड और ब्लेंडेड लर्निंग, फ्लिप्ड क्लासरूम तथा डिजिटल लाइब्रेरी का उपयोग हो रहा है। इन परिवर्तनों के कारण शिक्षण का स्वरूप बदल रहा है। पहले प्राय: शिक्षण शिक्षक प्रधान होता था किंतु शिक्षण में आज विद्यार्थियों की सहभागिता बड़ी है । आज शिक्षण प्रणाली छात्र केंद्रित हो गई है। आज के इस डिजिटल युग में शिक्षकों के सामने कई चुनौतियां उपस्थित है। शिक्षा शिक्षक केंद्रित न होकर विद्यार्थी केंद्रित हो गई है। इन सभी चुनौतियों और बदलाव के कारण डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका बदल रही है।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक की प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक युवाओं के जीवन को दिशा देते हैं एवं एक बेहतर समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। एक शिक्षक का कार्य केवल पढ़ाने, समझाने और निर्देशन देने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि शिक्षक का प्रमुख कार्य विद्यार्थी को प्रेरित करना, विद्यार्थियों के छुपे हुए गुणों को उजागर करना तथा एक अच्छे भविष्य निर्माण में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना होता है। अमेरिकी प्रेरक लेखक विलियम अरुथुर वार्ड के अनुसार 'औसत दर्जे का शिक्षक बताता है। अच्छा शिक्षक समझाता है। श्रेष्ठ शिक्षक प्रदर्शित करता है। महान शिक्षक प्रेरित करता है।' शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होता है।

पारंपरिक शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका –

परम्परागत शिक्षण में , शिक्षण शिक्षक केन्द्रित होता है अध्यापक ही ज्ञान का सृजक होता है, विद्यार्थियों तक अपने ज्ञान को संप्रेषित करता है तथा विषय वस्तु को गहराई से समझाता है। कक्षा कक्ष वातावरण निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके

अतिरिक्त शिक्षक विद्यार्थियों का मूल्यांकन करता है, विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है तथा विद्यार्थियों को एक अच्छे भविष्य निर्माण हेतु प्ररित करता है। शिक्षक विषय के तथ्यों के आलावा विद्यार्थियों को जीवन मूल्यो को भी समझाता है। इस प्रकार वह विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शिक्षक विद्यार्थियों को स्नेह के साथ कठोर अनुशासन में रखते हुआ विद्यार्थियों के सतत विकास के लिए अपने पूर्ण प्रयास करने में प्रयत्न रत रहता है। शिक्षक ही विद्यार्थियों के सम्पूर्ण कार्यो के लिए उत्तरदायी होता है। विद्यार्थी पूर्ण समर्पण के साथ शिक्षक के प्रति निष्ठा की भावना रखते हे एवम आज्ञाकारिता के पालन में स्वयं को गोरवान्वित महसूस करते है।

डिजिटल युग में शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन -

डिजिटल युग में शिक्षा जगत में कई परिवर्तन आये है। आज विद्यार्थी के पास सूचना एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए कई संसाधन उपलब्ध है। इन्टरनेट पर प्रत्येक विषय से सम्बंधित विषय वस्तु की जानकारी उपलब्ध है। हर विषय से सम्बंधित यू ट्यूब विडियो, लेक्चर, टुटोरिअल, सन्दर्भ सामग्री प्रचुर मात्र में वेब पर पायी जाती है। कोविड 19 के बाद से ऑनलाइन क्लासेज ने शिक्षा का स्वरुप बदल दिया है। शिक्षा का वैश्वीकरण हो गया है। आज हमारे देश के किसी छोटे से गाँव का कोई विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से विदेश की किसी अच्छी यूनिवर्सिटी से कोई कोर्स कर सकता है। डिजिटल युग में फ्लिप्ड क्लासरूम का उपयोग किया जाता है, जिसमें शिक्षण प्रक्रिया को पूरी तरह उलट दिया जाता है। ब्लेंडेड लर्निंग का भी उपयोग होता हैए जिसमे परंपरागत और ऑनलाइन दोनों प्रक्रिया द्वारा शिक्षण होता है। हर स्तर एवं विषय में कई मूक कोर्सेज उपलब्ध है। प्रतियोगी परीक्षाओ की तयारी के लिए भी ऑनलाइन कोचिंग उपलब्ध है। आज विद्यार्थी कक्षा में जाने से पहले ही विषय वस्तु की जानकारी प्राप्त कर लेता है। कई वर्चुअल लाइब्रेरीज तथा वर्चुअल प्रयोगशालाओ का उपयोग उसके द्वारा किया जाता है। आज कोई भी विद्यार्थी देश के किसी भी कोने में बैठकर किसी भी विद्वान् शिक्षक से पढ़ सकता है। डिजिटल युग में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित न हो कर विद्यार्थी केन्द्रित हो गयी है।

डिजिटल युग में शिक्षक के सम्मुख उपस्थित चुनौतियां -

डिजिटल युग में शिक्षक के सामने कई प्रकार की चुनौतियां होती है। प्रतिपल बदलती तकनीकी के साथ शैक्षिक वातावरण के निर्माण में शिक्षक को अपना योगदान देने के लिए निरंतर प्रयास करने पड़ते है। कुछ प्रमुख चुनौतियां निम्न है -

विद्यार्थियों में बदलाव -

इस डिजिटल एवं वैश्विक युग में विद्यार्थी में कई प्रकार के बदलाव आये है। आज का विद्यार्थी कक्षा में पढाई जाने वाली विषय वस्तु से पहले से ही परिचित होता है। इस युग में विद्यार्थी पहेले से ज्यादा जागरूक हुए है, हमेशा ऑनलाइन रहने से उन्हें हर क्षण में नित नयी जानकारिया प्राप्त होती रहती है। उनमे प्रश्न पूछने की क्षमता का विकास हुआ है। विद्यार्थियों में आये इस बदलाव ने शिक्षक का सामने एक बड़ी चुनौती उतपन्न कर दी है।

सही विषय वस्तु का चयन करने में विद्यार्थी की मदद करना-

आज टेक्नॉलॉजी के युग में प्रत्येक विद्यार्थी आसानी से किसी भी विषय वस्तु पर जानकारी प्राप्त कर सकता है। हर विषय वस्तु पर जानकारियों का अथाह सागर इंटरनेट पर उपलब्ध है। किंतु उसमें से विद्यार्थी के लिये कौन सी जानकारी उसके अनुकूल है, जिसका उपयोग करके वह अपने ज्ञान में सकारात्मक रूप से वृद्धि कर सकता है, इसकी पहचान शिक्षक ही करा सकता है। इंटरनेट पर कई ऐसी जानकारियां भी उपलब्ध है जिनका उपयोग विद्यार्थी के लिए सही एवं प्रामाणिक नहीं है। सही जानकारी का चयन एवं उसका उपयोग ठीक प्रकार से करना उसके समक्ष एक बड़ी चुनौती है। आज के डिजिटल युग में किसी भी विषय पर जानकारियों का अभाव नहीं है, अपितु बहुत ही उच्च कोटि की शिक्षण सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध है। उपलब्ध जानकारियों में बहुत सी सामग्री ऐसी भी है जिसमें तथ्यों को ठीक से समझाया नहीं गया है तथा उनका स्तर भी ठीक नहीं है। ऐसे में शिक्षक के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती है कि छात्रों को सही जानकारी खोजने में सहायता करे, उनका मार्गदर्शन करें। ऑनलाइन अध्ययन में क्या सीखना है? और कैसे सीखना है ? इंटरनेट पर शिक्षण सामग्री के उपयोग से संबंधित कानूनी और नीतिगत मुद्दों को विद्यार्थी को समझाना भी शिक्षक का ही कार्य है।

डिजिटल नेटिव विद्यार्थी -

डिजिटल नेटिव का अर्थ है जो अपने बचपन से ही इंटरनेट और मोबाइल फोन का उपयोग कर रहा हो। आज के विद्यार्थी के चारों तरफहमेशा डिजिटल नेटवर्क जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि रहते हैं। इस कारण वह कक्षा में अध्यापक जो भी पढ़ा रहा है प्राय: उस पर ध्यान नहीं देते। ऐसे विद्यार्थियों की अपनी अलग ही दुनिया रहती है वो हमेशा सोशल मीडिया की दुनिया में रहते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ाना और पढ़ने के लिए प्रेरित करना शिक्षक के समक्ष एक प्रमुख चुनौती है।

नए तकनीकी टूल्स से परिचित होना -

टेक्नॉलॉजी अध्ययन के क्षेत्र में भी नित नए टूल्स ला रही है। आज अध्ययन के क्षेत्र में बहुत से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स भी उपलब्ध है जिनका उपयोग अध्ययन अध्यापन के लिए किया जा सकता है। आज के इस डिजिटल युग में शिक्षण के लिए अध्यापकों का इन सभी टूल से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है तभी वह इन टूल्स का समुचित उपयोग कर पाएंगे।

इंफ्रास्ट्रक्चर का अभाव -

आज के युग में भी कई जगह डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी होती है। इंफ्रास्ट्रक्चर के आभाव में विद्यार्थियों को ही नहीं वरन शिक्षको को भी समुचित जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है एवं शिक्षक स्वयं तकनीकी संसाधनों का प्रयोग नहीं कर पाते है। ऐसी अवस्था में अनभिज्ञ शिक्षक विद्यार्थियों को पूर्ण अधिगम करवाने में समर्थ नहीं हो सकते है। कई जगह इंटरनेट कनेक्शन सही तरीके से नहीं आता, तो कई विद्यार्थियों के पास मोबाइल ,कंप्यूटर आदि उपकरण नहीं होते। इनके अभाव से शिक्षण अधिगम संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती है।

डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका -

तकनीक के इस युग में शिक्षक की भूमिका में कई बदलाव आए हैं। शिक्षक को अपने आध्यतन ज्ञान को विस्तार देने की सोच रखने की आवश्यकता होती हैं, जिससे वह नवीनतम तकनीकी जानकारी को शीघ्रता के साथ आत्मसात कर सके। जब शिक्षक तकनीकी को सही प्रकार से उपयोग में लेन में सक्षम होगा तभी वह विद्यार्थियों को तकनीकी सहायता प्रदान करते हुए समर्थ बना सकेगा। किसी भी विषय वस्तु पर जानकारी प्रदान करने के कार्य की बजाए अब उसकी प्रमुख भूमिका विद्यार्थी को विषय वस्तु का सही चयन करने में मदद करना है। शिक्षक को विद्यार्थी में इस प्रकार के गुण विकसित करने होंगे कि वह स्वयं अपने विवेक से यह विश्लेषण कर सके कि कौन सी जानकारी कितनी प्रमाणिक है तथा उसका उपयोग कहां करना है। उसकी जिम्मेदारी है कि वह विद्यार्थी को खुले विचारों से निर्णय लेने में सहायता प्रदान करें।

आज के इस डिजिटल युग में जब विद्यार्थी हर समय सोशल मीडिया की दुनिया में खोया हुआ है तथा यथार्थ की दुनिया से बहुत दूर है, ऐसे समय में उसे अच्छे भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित करना एक शिक्षक का ही कार्य है। शिक्षक की यह जिम्मेदारी बन जाती है कि वह विद्यार्थियों को यह समझाएं कि सोशल मीडिया एवं तकनीकी टूल्स का उचित प्रयोग करें। वह सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानकारियों का उपयोग अपने ज्ञानार्जन के लिए, अनुसंधान के लिए, रोजगार के लिए एवं अपने भविष्य निर्माण हेतु कर सकते हैं। उन्हें यह भी बताना आवश्यक है की सोशल मीडिया के अनुचित प्रयोग से से उन्हें कई समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है। फेसबुक और इंस्टाग्राम के उपयोग में विद्यार्थी अपना अमूल्य समय गवां देते हैं तथा उनकी पढ़ाई भी बाधित होती है। कई विद्यार्थियों को इंटरनेट पर गेम्स खेलने की लत लग जाती है जो उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को खराब करता है।

आज के इस तकनीकी युग में नित नए टूल्स विकसित हो रहे हैं जिनका शिक्षण में भी उपयोग किया जा रहा है। आज कल ज्यादातर विद्यार्थी हमेशा ऑनलाइन रहते हैं तथा उनके पास हर विषय से संबंधित जानकारियां होती हैं एवं वे नए तकनीकी पहलुओं से भी परिचित होते हैं। ऐसे में शिक्षक को भी अपने कौशल को हमेशा विकसित करते रहना होगा। विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए उससे पहले स्वयं को विषय वस्तु से भली-भांति वाकिफहोना होगा तथा उसे नए तकनीकी टूल्स का उपयोग करने में सक्षम होना होगा। इस युग में शिक्षक में नित्य नया सीखने की प्रवृत्ति का होना अत्यंत आवश्यक है।

सारांश -

शिक्षक की शिक्षण जगत में हमेशा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में चाहे कितने ही परिवर्तन क्यों न हो जाये शिक्षक का स्थान कोई नहीं ले सकता है। किन्तु शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन के कारण उसकी भूमिका में बदलाव जरुर आया है। आज का युग डिजिटल युग है और डिजिटल युग ने हर क्षेत्र की तरह शिक्षण जगत में भी क्रन्तिकारी परिवर्तन किये है। आज शिक्षण के लिए अनेक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स का प्रयोग हो रहा है। एक माउस क्लिक पर विद्यार्थी मनचाही जानकारी प्राप्त कर सकता है। किसी भी विषय को पढ़ने और सीखने के लिए अनेको ऑनलाइन टुटोरिअल उपलब्ध है। किसी भी देश के किसी भी कोने में बैठा विद्यार्थी किसी दुसरे देश के प्रतिष्ठित संसथान से शिक्षा प्राप्त कर सकता है। आज की शिक्षा अध्यापक केन्द्रित न होकर विद्यार्थी केन्द्रित हो गयी है। आज के युग में शिक्षक का कार्य केवल पढ़ाने, समझाने और निर्देशन देने तक ही सीमित नहीं है अपितु उसे अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करना है की इस डिजिटल युग में उपलब्ध शिक्षण सामग्री का सही चुनाव कैसे करे? कैसे नयी तकनीक का उपयोग कर शिक्षक अपने भविष्य को उज्जवल बनाये। इस युग में शिक्षक को अपने में भी नित नवीन कौशलों का विकास करना होगा। शिक्षक को नयी तकनीको को भी आवश्यक रूप से सीखना होगा ताकि वह डिजिटल युग के साथ कदम से कदम मिला करे चल सके। शिक्षक को वर्तमान की आवश्यकताओ को दृष्टिगत रखकर अपनी भूमिका में सतत परिवर्तन एवम सुधार करते रहना होगा।

संदर्भ सूची -

1. Amin N.J. (2016) Redefining the Role of Teachers in the Digital Era, The International Journal of Indian Psychology ISSN 2348-5396, Volume 3, Issue 3, No. 6, https://oaji.net/articles/2016/1170-1463510528.pdf
2. Basu S. and Malik R. (2020) Role Of Information And Communication Technology In Education,

Ilkogretim Online - Elementary Education Online, Vol 19 , Issue 1, https://www.ilkogretim-online.org/fulltext/218-1642083008.pdf, doi: 10.17051/ilkonline.2020.661912

3. Dhanda S. (2015) Change In Student and Teacher Roles Using Technology In Class Room, International Journal of Education and Information Studies, ISSN 2277-3169 Volume 5, Number 1, https://www.ripublication.com/ijeisv1n1/ijeisv5n1_06.pdf
4. Fitria H. and Suminah (2020) Role of Teachers in Digital Instructional Era, Journal of Social Work and Science Education, E-ISSN: 2723 – 6919, Volume 1 (1), https://ejournal.karinosseff.org/index.php/jswse/article/view/11/11
5. Labbas R and and Shaban A El. (2020) TEACHER DEVELOPMENT IN THE DIGITAL AGE, Teaching English with Technology, 13(3), https://www.researchgate.net/publication/324975347_TEACHER_DEVELOPMENT_IN_THE_DIGITAL_AGE
6. Lanier J.T. (1997) Redefining the Role of the Teacher: It's a Multifaceted Profession https://www.edutopia.org/redefining-role-teacher
7. Mahini F., Forushan Z.J.A. & Haghani F. (2012) The Importance of Teacher's Role in Technology-Based Education, Procedia - Social and Behavioral Sciences, Volume 46, https://reader.elsevier.com/reader/sd/pii/S1877042812014772?token=33670E4D5727D927390F0B0084B912480B9CCA4657E806C5D05177296E4199BB502C082C7AA3928FD184F9126C201BD5&originRegion=eu-west-1&originCreation=20230319113829, https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2012.05.348
8. Mumtaz S. (2000) Factors affecting teachers' use of information and communications technology: a review of the literature, Journal of Information Technology for Teacher Education, Vol. 9, No. 3, https://www.tandfonline.com/doi/epdf/10.1080/14759390000200096?needAccess=true&role=button
9. Sharma M. (2017) Teacher in a Digital Era, Global Journal of Computer Science and Technology: G Interdisciplinary Volume 17 Issue 3 Version 1.0 Online ISSN: 0975-4172 https://globaljournals.org/GJCST_Volume17/2-Teacher-in-a-Digital-Era.pdf
10. Singh G. (2016) Challenges for Teachers in the Era of E-learning in India, Scholedge International Journal of Multidisciplinary & Allied Studies, Scholedge R&D Center, ISSN 394-336X, Vol.03, Issue02, https://thescholedge.org/index.php/sijmas/article/view/281/382, DOI:10.19085/journal.sijmas030201
11. Wang Qianjiao (2019) Research on the Role of Teachers in Traditional Teaching Mode and "MOOC Plus Flipped Classroom" Teaching Mode , Proceedings of the 3rd International Conference on Culture, Education and Economic Development of Modern Society, https://www.atlantis-press.com/proceedings/iccese-19/55915852 , DOI 10.2991/iccese-19.2019.224